



नटराज स्तोत्रं (पतंजलि इतम्)-यरणशृंगरहित श्री नटराज



<https://www.chalisa.online>

॥ नटराज स्तोत्रं (पतंजलि इतम्) ॥

यरणशृंगरहित श्री नटराज स्तोत्रं

सद्यित-मुद्यित निरुद्यित पदं अवज्ञ-यवित मंजु कटकं ।

पतंजलि दृगंजन-मनंजन-मयंयवपदं जनन भंजन करम् ।

कदंभरुचिमंभरवसं परममंभुद कदंभ कविंभक गवम्

यिंभुषि मणिं भुध हृद्युज रवि पर यिंभर नठं हृदि भज ॥ 1 ॥

हरं त्रिपुर भंजन-मनंतइतकणा-मधंदद्य-मंतरहितं

विरिचिसुरसंहतिपुरेधर विचितिपदं तरुणयंद्रमकुटम् ।

परं पद विंडितयमं भसित मंडिततनुं मदनवंयन परं

यिरंतनममुं प्रणवसंयितनिषि पर यिंभर नठं हृदि भज ॥ 2 ॥

अवंतमधिवं जगद्भंग गुणतुंगममतं धृतविधुं सुरसरित-

तरंग निकुरुभ धृति लंपट जटं शमनदंभसुहरं भवहरम् ।

शिवं दशादिगंतर विजुंभितकरं करवसन्मृगशिशुं पशुपति

हरं शशिधनंजयपतंगनयनं पर यिंभर नठं हृदि भज ॥ 3 ॥

अनंतनवरत्नविलसत्कर्त्तुकिणिजवं अवज्ञवं अवरवं

मुकुंदविषि हस्तगतमद्व लयध्वनिषिभिद्विभित नर्तन पदम् ।

शाकुंतरथ बहिंरथ नंदिमुख भूगिरिटिसंघनिकटं भयहरम्

सनंद सनक प्रमुख वंदित पदं पर यिंभर नठं हृदि भज ॥ 4 ॥

अनंतमहसं त्रिदशवंद्य यरणां मुनि हृदंतर वसंतममवम्

कदंध वियदिद्ववनि गंधवह वहिमभ बंधुरविमंजु वपुषम् ।

अनंतविभवं त्रिजगदंतर मणिं त्रिपुर घंडन परम्

सनंद मुनि वंदित पदं सकलणां पर यिंभर नठं हृदि भज ॥ 5 ॥

अयित्यमविवृद्ध रुचि बंधुरगवं कुरित कुंद निकुरुभ धववम्

मुकुंद सुर वृद्ध भव छंतृ कृत वंदन वसंतमहिकुंदव धरम् ।

अकंपमनुकंपित रति सुजन मंगवनिषि गजहरं पशुपतिम्

धनंजय नुतं प्रणात रंजनपरं पर यिंभर नठं हृदि भज ॥ 6 ॥

परं सुरवरं पुरहरं पशुपति जनित दंतिमुख षण्मुखममुं

मृदं कनक पिगव जटं सनक पंकज रवि सुमनसं हिमरुचिम् ।

असंघमनसं जवधि जन्मगरवं कववयंत मतुवं गुणनिषिम्

सनंद वरदं शमितमिद्व वदनं पर यिंभर नठं हृदि भज ॥ 7 ॥

अजं क्षितिरथं भुजंगपुंगवगुणां कनक शृंगि धनुषं करवसत्

कुरंग पृथु टंक परथुं रुचिर कुंकुम रुचि उमरुकं य दधतं ।

मुकुंद विशिष्यं नमदवंध्य फलदं निगम वृद्ध तुरगं निरूपमं

स यंडिकममुं जटिति संहृतपुरं पर यिंभर नठं हृदि भज ॥ 8 ॥

अनंगपरिपंथिनमजं क्षिति धुरंधरमवं करुणायंतमधिवं

जववंतमनवं दधतमंतकरिपुं सततमिद्व सुरवंदितपदम् ।

उदंयदरविद्वकुव बंधुशत विंभरुचि संहृति सुगंधि वपुषं

पतंजलि नुतं प्रणाव पंजर शुक्तं पर यिंभर नठं हृदि भज ॥ 9 ॥

इति स्तवममुं भुजंगपुंगव इतं प्रतिदिनं पठति यः इतमुखः

सदः प्रभुपद द्वितयदर्शनपदं सुवलितं यरण शृंग रहितम् ।

सरः प्रभव संभव हरित्यति हरिप्रमुख दिव्यनुत शंकरपदं

स गच्छति परं न तु जनुर्ज्वलनिषि परमदःभजनकं द्वितदम् ॥ 10 ॥

इति श्री पतंजलिमुनि प्रणीतं यरणशृंगरहित नटराज स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ <https://www.chalisa.online> ॥